सुभाषिणी देवी:

गुरुकुल परम्परा में महिला शिक्षा को समर्पित कर्मयोगिनी

सुभाषिणी देवी शोधपीठ

स्थापित 2023

विनिबन्ध (MONOGRAPH)

डॉ. डेज़ी

भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय
Bhagat Phool Singh Mahila Vishwavidyalaya
Khanpur Kalan, Sonepat, Haryana-131305
"B++" Grade University Accredited by NAAC

विनम्र श्रद्धांजलि

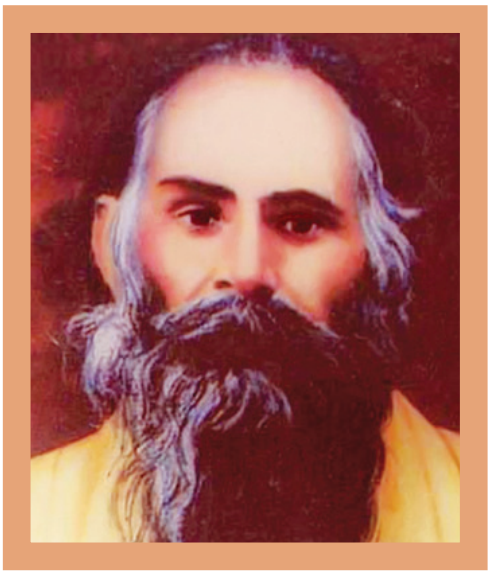

भगत फूलसिंह जी

(24-02-1885 से 14-08-1942)

सुभाषिणी देवी जी

(14-08-1914 से 10-03-2003)

प्राक्कथन

भारतीय समाज प्राचीन समय से 'ज्ञान' द्वारा ही संचालित समाज रहा है तथा इस धरा ने 'परम्परा व संस्कृति' के प्रति सदैव सम्मान रखते हुए स्त्रियों के बौद्धिक, सांस्कृतिक व सामाजिक योगदान को स्वीकारा ही नहीं, बहुत सराहा है. हालांकि वैदिक काल के बाद आने वाला कुछ समय दिशाहीन रहा व इस परम्परा में अवरोध उत्पन्न हुए, किन्तु यह सत्य है कि उन विपरीत व कठिन परिस्थितियों में भी 'गुरुकुलों' ने उसी मूल परम्परा का निर्वहन किया. फिर 'आर्य समाज' एक ऐसी संस्था बन कर उभरी जिसने वैदिक ज्ञान व गुरुकुलीय परम्परा को पुनः मुख्य धारा में लाकर भटके समाज को सही राह पर लाने के भरसक प्रयत्न किये. व्यवधानों के दौर में भी अनेकों महान व्यक्तियों ने कई स्थानों पर गुरुकुलों को स्थापित किया व सफलता पूर्वक संचालन किया. ऐसे समय में आर्यसमाज से प्रभावित भगत फूलसिंह जी का स्त्री-विरोधी मानसिकता वाले ग्रामीण समाज में "कन्या-गुरुकुल" स्थापित करने का प्रण ऐतिहासिक ही नहीं, अपितु साहसिक व क्रांतिकारी कदम था. उस पर विषम परिस्थितियों भी में उनकी सुपुत्री सुभाषिणी का इस स्त्री-हित के कार्य को आगे बढ़ाने की ज़िम्मेवारी लेना एक अभूतपूर्व घटना थी. लेकिन आलोचनाओं और व्यवधानों की परवाह न करते हुए असाधारण गुणों व अपार क्षमताओं से ओत-प्रोत इस निर्भया व सहिष्णु महिला सुभाषिणी ने वह कर दिखाया जो ग्रामीण क्षेत्र की घूंघट में रह रही स्त्रियों की कल्पना से भी बाहर की बात थी. पुरुष प्रधान समाज में निरंतर बढ़ती एक महिला-संस्था का नेतृत्व करते हुए पद्मश्री से सम्मानित बहनजी के प्रयासों के परिणामस्वरूप ही हम सब यहाँ सेवाएं देने के योग्य हो पाए हैं. यह एक सुखद अहसास है कि आज उनके व्यक्तित्व व विचारों के प्रसार के लिए "सुभाषिणी देवी शोधपीठ" का गठन हो गया है जिससे महिला-सशक्तिकरण को तो बल मिलेगा ही, यह पीठ सरकार की बेटियों के लिए बनाई नीतियों के लिए भी एक उत्प्रेरक सिद्ध होगी. प्रस्तुत विनिबंध (Monograph) एक सराहनीय व प्रभावशाली दस्तावेज तो है ही, मेरा मानना है कि स्त्री-शिक्षा व सशक्तिकरण के क्षेत्र में यह एक नयी ऊर्जा का संचार करेगा जिसका प्रवाह निरंतर जारी रहेगा. शोध-पीठ की निदेशिका को इस अच्छी पहल के लिए बहुत-बहुत बधाई ! मेरी शुभकामनाएं !

प्रो. सुदेश
कुलपति, भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय
एवं संरक्षक, सुभाषिणी देवी शोधपी

भूमिका

भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय एक व्यक्ति से विचार, और विचार से संस्थान की यात्रा का एक असाधारण व अतुलनीय उदाहरण है क्योंकि यह यात्रा विशेष तौर पर ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा से सशक्त करने के उद्देश्य से प्रारम्भ हुई और रास्ते के काँटों से जूझते हुए आज भी अनेकों बहन-बेटियों को सशक्त कर रही है. संस्थापक भगत फूलसिंह जी के बाद सुपुत्री सुभाषिणी ने ही संस्था को विकसित- विस्तृत करने का जो महाप्रण किया उसका परिणाम आज सबके सामने है. संस्थापक भगत फूल सिंह जी के वैचारिक विश्वास कि "भारतीय मूल्य प्रणाली में शिक्षित महिलायें ही वास्तव में समतावादी व प्रगतिशील समाज का निर्माण कर सकती हैं" का सदा अनुसरण करते हुए यह एक अनूठा शिक्षण-संस्थान है जहाँ जन-भागीदारी व भारतीय परम्परा को साथ लेकर आधुनिकता व सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया जाता है.

माननीया कुलपति महोदया द्वारा 'सुभाषिणी देवी शोधपीठ' का गठन किया जाना एक अति सराहनीय कदम है क्योंकि यह न केवल विश्वविद्यालय, बल्कि सम्पूर्ण समाज के लिए हितकारी साबित होगा. लोक-हित के लिए उठाये गए क्रांतिकारी व साहसिक क़दमों की ऐतिहासिक यात्रा तो इस पीठ के माध्यम से ज़ाहिर होगी ही, वर्तमान समय में उन मूल्यों की प्रासंगिता व अन्य सम्बद्ध विषयों पर भी समय-समय पर संगोष्ठियों के माध्यम से मंथन होता रहेगा. साथ ही अतीत की यादों को सहेज-समेट कर तकनीक के माध्यम से archives बनाकर संरक्षित करने व ऑनलाइन प्लेटफार्म पर लाकर सुदूर क्षेत्रों तक प्रचार-प्रसार करने के अलावा संस्थापकों पर विनिबंध (Monographs) तैयार करना भी पीठ के उद्देश्य है. पीठ के प्रथम प्रयास के रूप में आज की यह संगोष्ठी व इसमें पद्मश्री द्वारा सम्मानित बहन सुभाषिणी जी पर लिखे Monograph (सुभाषिणी देवी: गुरुकुल परम्परा में महिला शिक्षा को समर्पित कर्मयोगिनी) का लोकार्पण होना एक अत्यंत सुखद अनुभव है. अंततः प्रशासन का धन्यवाद करते हुए आप सभी (विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य अथवा अन्य) से शोधपीठ का एक विनम्र निवेदन कि यदि आपके पास ऐसी कोई पठन-पाठन सामग्री, तस्वीरें या किसी भी रूप में इस संस्था, स्थान, संस्थापकों से जुड़ी यादें हैं तो कृपया हमसे संपर्क करें.

डॉ. डेज़ी

निदेशिका, सुभाषिणी देवी शोधपीठ

sdchair@bpswomenuniversity.ac.in / 9416141965

विषय-सूची

भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय	00
भगत फूल सिंह जी	00
सुभाषिणी देवी जी	00
सामाजिक परिप्रेक्ष्य	00
प्रमुख धारणा	00
वैदिक काल की नारी: प्रेरणा स्त्रोत	00
वेद व आर्य समाज	00
गुरुकुल परम्परा	00
जन-भागीदारी	00
मूल्य आधारित शिक्षा	00
नए सोपानों की ओर...	00
सुभाषिणी देवी शोधपीठ	00

भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय

बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक के ग़ुलाम भारत में जब देशभर के नारी शिक्षा के केंद्र उँगलियों पर गिने जा सकते थे, ऐसे समय में उत्तरी भारत के छोटे से गाँव खानपुर कलां में सन 1936 में कन्या गुरुकुल की स्थापना हुई। यह 'ऐतिहासिक' था क्योंकि बेटियों को पढ़ाना और इससे भी अधिक उन्हें घर से बाहर किसी गुरुकुल में भेजना क्षेत्र के लोगों को मान्य न था. कारण बेटियों की पढाई पर पैसा लगाना व्यर्थ मानना (क्योंकि उन्हें विवाह के पश्चात पति के घर जाना ही होता था) एवं उनका घर से बाहर सुरक्षित न होना था। अतः कार्य बहुत ही कठिन व चुनौतीपूर्ण था, लेकिन क्षेत्र में शिक्षा-प्रसार का प्रण हृदय में लिए भगत फूल सिंह ने (जो इससे पूर्व सन 1919 में गाँव भैंसवाल कलां में लड़कों का गुरुकुल स्थापित कर चुके थे) नारी शिक्षा को अधिक महत्वपूर्ण मानते हुए मात्र तीन छात्राओं से ही कन्या गुरुकुल की स्थापना की। अपनी दो पुत्रियों में बड़ी सुभाषिणी को वे पहले ही अन्य गुरुकुल से शिक्षा दिलवा कर अध्यापिका बना चुके थे, छोटी बेटी गुणवती को यहाँ की प्रथम छात्रा बना दिया। कुल मिलाकर केवल तीन छात्राएं ही प्रारम्भ में दाखिल हुई, फिर एक छात्रा (शान्ति) कुछ समय बाद दाखिल हुई. इस प्रकार कन्या गुरुकुल के प्रारम्भिक चरण की चार स्नातिकाएँ रही - गुणवती, कुन्ती, गार्गी और शान्ति. प्रारम्भ में जगह के पर्याप्त न होने के कारण चौधरी न्यौनन्द सिंह तथा उनकी धर्मपत्नी यशोदा जी के पास इन छात्राओं को 6 महीने के लिए अध्ययन करना पड़ा, फिर 1 वर्ष तक रोहतक, तथा उसके बाद जींद के भगवद्भक्ति आश्रम में 1 वर्ष तक अभिमन्यु जी व मनसाराम जी के संरक्षण में रही. तब कहीं जाकर 1939 में यह गुरुकुल की पाठशाला स्थाई रूप से खानपुर में आ गयी. सन 1954 तक आठवीं तक पढाई

बायें से – 1. कन्या गुरुकुल पाठशाला का प्रथम मुख्य द्वार (1978), 2. कन्या गुरुकुल का द्वितीय मुख्य द्वार (1986), 3. महिला विश्वविद्यालय का वर्तमान मुख्य द्वार (2007)

प्राइवेट ही रही. तत्पश्चात लाला लहरी सिंह (जो सेवानिवृत्त मास्टर थे) ने 1955 में मुख्याध्यापक का पद ग्रहण कर अपनी सेवाएं दी. उन्ही के समय यह विद्यालय मान्यता प्राप्त हाई स्कूल बन गया. इसी विद्यालय में फिर अनेकों सुधार कार्य अगले मुख्याध्यापक लाला हरिश्चंद्र के कार्यकाल में हुए.

इसी गुरुकुल का विस्तार है आज का 'भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय' जहाँ आज क़रीब 7000 छात्राएं (K.G. से Ph.D. तक) विभिन्न विषयों में शिक्षा अर्जन कर रही हैं. 1936 में जो गुरुकुल केवल उदारता, परोपकार व जन-भागीदारी पर आश्रित था, वही 18 अगस्त 2006 में राज्य सरकार द्वारा महिला विश्वविद्यालय बना दिया गया. उत्तरी भारत का यह प्रथम महिला विश्वविद्यालय निस्संदेह भगत फूल सिंह जी की (बेटियों को समाज में उचित सम्मान व स्थान दिलवाने की) दूरदर्शी सोच का ही परिणाम रहा, किन्तु नारी उत्थान का यह महायज्ञ उनकी बड़ी सुपुत्री सुभाषिणी की निर्विराम सतत आहुतियों के बिना चलते नहीं रह सकता था जिन्होनें सरकारी नौकरी और निजी सुखों का त्याग कर आजीवन गुरुकुल की सेवा की. ये

सुभाषिणी जी की ही बदौलत है कि बदलते समय के साथ नित नए संस्थान गुरुकुल में शामिल होते चले गए.

आज के वैश्वीकरण के दौर में महिला विश्वविद्यालय के सभी 17 विभागों, 3 घटक संस्थानों, अंग्रेजी व हिंदी माध्यम के 2 विद्यालयों, 2 क्षेत्रीय केंद्रों, 6 सम्बद्ध महाविद्यालयों में यथोचित रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ भगत जी के मुख्य विचार "केवल भारतीय मूल्य प्रणाली में शिक्षित महिलायें ही वास्तव में समतावादी और प्रगतिशील समाज का निर्माण कर सकती हैं " को सदैव स्मरण करते हुए मूल्यपरक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है. इतना ही नहीं, यह हरियाणा प्रदेश का प्रथम विश्वविद्यालय है जहाँ भाषा-प्रयोगशाला (Language Labs) व भारत-एशिया अध्ध्य्यन केंद्र (Centre for Indic-Asian Studies) जैसे विशिष्ट केंद्र स्थापित किये गए. इसके अतिरिक्त यह अनूठा विश्वविद्यालय है जहाँ सामुदायिक सहभागिता के तहत विश्वविद्यालय समाज से जुड़ा रहता है.

भगत फूल सिंह जी

भगत फूल सिंह जी का जन्म 24 फरवरी 1885 को हरियाणा के गाँव माहरा, जिला रोहतक (अब यह गाँव जिला सोनीपत के अंतर्गत आता है) में किसान चौधरी बाबर सिंह व श्रीमती तारावती के घर दुसरे पुत्र के रूप में हुआ जिसका नाम हरफूल सिंह रखा गया. ज्योत्षी के अनुसार यह बालक यशस्वी बनकर अपने कुल और गाँव का नाम रोशन करने वाला होना था. इसलिये यद्यपि बड़ा क़र्ज़ सिर पर होने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, तथापि उन्होंने कुशाग्र बुद्धि बालक हरफूल को पढ़ाने के लिए कोई कसर न छोड़ी. पहले साथ लगते गाँव जुआं में, फिर महरौली (दिल्ली), और तत्पश्चात खरखौदा (सोनीपत) के स्कूलों में भेजकर मिडिल (आठवीं) पूरी करवाई. खरखौदा स्कूल में ही इन्हे हरफूल की जगह फूल सिंह नाम दिया गया जिस नाम से आज तक हम इन्हें जानते हैं. उस समय में स्कूल हर गाँव में नहीं होते थे और मिडिल तक की योग्यता ही कई नौकरियों के द्वार खोल देती थी. उस समय पटवारी की नौकरी को बहुत सम्मान दिया जाता था. अतः फूल सिंह जी ने पटवारी परीक्षा दी और उसे अच्छे अंकों से पास कर वह फूल सिंह पटवारी बन गए. विवाह हुआ. लगभग दो वर्ष अच्छी नौकरी के ठाठ व विलासिता पूर्ण जीवन जीकर इनका रुझान समाज सेवा में हुआ. अपने मित्र व साथी पटवारी प्रीतसिंह की संगत में यह आर्य समाज से जुड़ गए. गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) के उत्सव में स्वामी श्रद्धानन्द जी (आर्यसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक) के शब्दों – "आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है. भटके हुए लोगों को सुमार्ग पर लाओ" ने इन पर ऐसी छाप छोड़ी कि 'परोपकार' इनके जीवन का ध्येय बन गया. गृहस्थी के लिए पर्याप्त धन न होने पर भी अपने खर्चे पर अनेकों साधू-सन्यासियों, उपदेशकों, भजनियों के कार्यक्रम करवाते, लोगों को आर्य समाज से जोड़ते. परिणाम यह हुआ कि इनकी प्रसिद्धि दूर-दूर के गाँव तक फैल गयी. अपने उपदेशों में यह सदा कहते - 'सफाई, सच्चाई, तरतीब सदा रहनी चाहिए' और स्वयं के उदाहरण से इन बातों के लिए लोगों को प्रेरित करते. सेवा भाव तो इन्होंने अपनी माता तारा देवी से गृहीत किया ही था, वह भी इतना कि हर उम्र, जाति, तबके - सबकी अहंकार त्याग कर सेवा करते. समाज सेवा के कार्यों में जहाँ अधिकतर नरमी से काम चलता, वहाँ कभी-कभार कुछ असामाजिक तत्वों के साथ सख्ती भी करनी पड़ती. कर्मठता, निडरता, दृढ़-निश्चय और स्त्रियों के प्रति सदैव सम्मान इनके अन्य प्रमुख गुण थे. इन गुणों में एक और महत्वपूर्ण गुण (ईमानदारी) और जुड़ा जब गाँव बुआना-लाखू के एक सज्जन ख्यालीराम से आपका संपर्क हुआ और आपको रिश्वत और रिश्वत लेने वालों से नफरत हो गयी. अतः इन्होंने प्रतिज्ञा की कि 'आजीवन किसी भी परिस्थिति में रिश्वत नहीं लूँगा'. यह वर्ष था सन 1914 जब इनकी सुपुत्री सुभाषिणी ने जन्म लिया. समाज सेवा में अधिकाधिक लिप्त होने के कारण 1916 में इन्होंने नौकरी से पहले एक वर्ष के लिए अवकाश और फिर त्यागपत्र दे दिया. अब ये भगत जी के नाम से ही जाने जाने लगे थे. सेवा मार्ग पर चलते इनको विशेष सहयोग जिन लोगों से मिला उनमे चौधरी छोटूराम जी (ब्रिटिश भारत के पंजाब प्रांत के एक प्रमुख राजनेता एवं विचारक) प्रमुख थे.

सेवा कार्य करते-करते इन्हें माहरा गाँव में 'आर्य युवक विद्यालय' खोलने की जिज्ञासा हुई ताकि युवाओं का भला हो सके, किन्तु स्वामी ब्रह्मानंद जी की सलाह से इन्होने गुरुकुल खोलने का निर्णय लिया ताकि बचपन से ही बालकों में संस्कार डाले जा सकें. सत्यार्थप्रकाश (आर्यसमाज का पवित्र ग्रन्थ) के अनुसार गुरुकुल खोलने के लिए गाँवों के रिहायशी इलाके से बाहर खुली ज़मीन चाहिए थी जिसके लिए गाँव भैंसवाल के जंगल उचित जान पड़े.

प्रवेश द्वार गुरुकुल भैंसवाल

इस प्रकार 1919 में लड़कों के गुरुकुल भैंसवाल की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी के कर-कमलों से हुई जो उस समय पैदल चलकर ही सोनीपत से भैंसवाल (बारह कोस) पहुंचे थे क्योंकि यहां तक न कोई सड़क ही थी , न कोई वाहन. तत्पश्चात सन 1920 में तीन दिन के महोत्सव के बाद नन्हे-नन्हे बालकों का दाखिला हुआ जिनका वेदारम्भ भी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ही करवाया. यह निःशुल्क होता था. गुरुकुल संचालन के लिए प्रबंधक सभा बना दी गयी. यद्यपि सेवाकार्यों, पंचायती कार्यों तथा सामाजिक कार्यों में लिप्त रहने की वजह भगत जी स्वयं भैंसवाल गुरुकुल का अधिक ख्याल नहीं रख पा रहे थे, तथापि हरियाणा की लड़कियों को समाज में सम्मान दिलवाने हेतु उनकी शिक्षा को आवश्यक समझकर आपने समिति के समक्ष खानपुर गाँव में कन्या गुरुकुल स्थापित करने का प्रस्ताव रखा. थोड़ा विरोध हुआ किन्तु इनके समझाने पर समिति सदस्य आश्वस्त हो गए. भगत जी की दूरदर्शिता ही थी जो देख पा रही थी कि भविष्य में यही निर्णय उत्तम व ऐतिहासिक सिद्ध होगा.

इस प्रकार सन 1936 में कन्या गुरुकुल (पहले 'कन्या पाठशाला') की स्थापना गाँव खानपुर कलां में मिली 13 बीघा ज़मीन से ऐसी जगह की गयी जहाँ कई वट वृक्ष थे और पास ही एक सरोवर था. असल में यह भूमि पहले एक साधू रूपराम जी को गाँव वालों ने दान की हुई थी. उन्होंने ही यहां पर बरगद, पीपल और जामुन के पेड़ लगाए थे. जब उनका देहावसान हुआ, तो भगत फूल सिंह जी के आग्रह पर 1927 में यहाँ गौशाला खोली गयी ताकि गुरुकुल भैंसवाल के छात्रों के लिए दूध की आपूर्ति हो सके (भैंसवाल में ऐसी जगह न मिल पायी थी). जब पाठशाला खोलने का निर्णय हुआ तो भगत जी के इस नेक कार्य में सर्वप्रथम इनके चाहने वाले चौधरी जयराम जी ने अपनी 25 बीघे भूमि दान की और दान देने का सिलसिला चल पड़ा. इस पवित्र कार्य के लिए खानपुर गाँव के अनेकों दानवीरों ने समय-समय पर गुरुकुल खानपुर के लिए भूमि दान की. सर्वप्रथम तीन - इसराना से गार्गी, कासंडी से कुन्ती, तथा माहरा से गुणवती (भगत जी की छोटी बेटी); और फिर सत्रह छात्राएं यहाँ की शुरूआती स्नातिकाएँ बनी. तब यहाँ दूर-दूर तक कोई और कन्या विद्यालय नहीं था. चंदे/दान से धन एकत्रित किया जाता जिससे

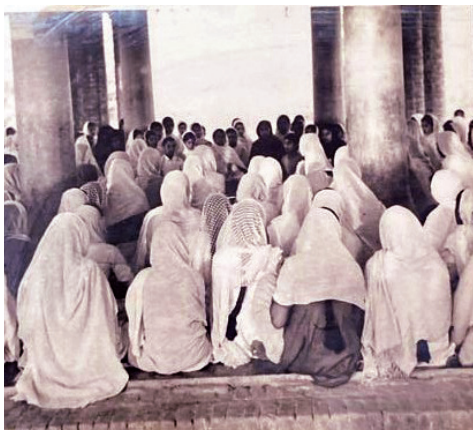

बायें से -1. कुंती, गुणवती, गार्गी ; 2. आचार्य विष्णुमित्र जी व छात्राएँ; 3. छात्राएँ यज्ञशाला में हवन करते हुए

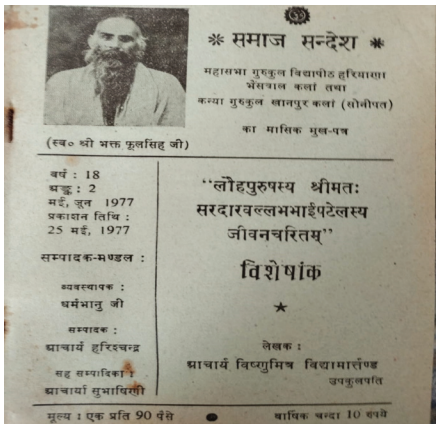

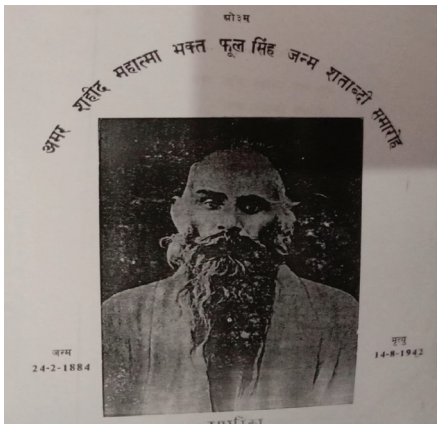

बायें से - 1. स्मरण-पत्र तथा नियमावली (1972), 2. मासिक न्यूज़ लेटर 'समाज-सन्देश (1977), 3. भगत फूल सिंह जन्म शताब्दी स्मारिका (1984)

बच्चियों की पुस्तकें आदि उपलब्ध करवाई जाती. पूरी तरह से गुरुकुलीय पद्धत्ति से ये छात्राएं यहाँ जीवन यापन करती. अध्ययन सम्बन्धी दिनचर्या के अलावा उन्हें निर्भय, आत्मनिर्भर व आत्मरक्षा हेतु घुड़सवारी व लाठी चलाना भी सिखाया जाता था. महत्वपूर्ण यह रहा सरकारी नौकरी कर रही अपनी पुत्री सुभाषिणी को इन्होंने हर प्रकार से गुरुकुल संचालन के अनुरूप पाया और उसे अनेक बेटियों के सेवा का वास्ता देकर सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दिलवा दिया. दामाद पंडित अभिमन्यु जी तो इस कार्य हेतु उनकी पसंद थे ही. इस प्रकार सुभाषिणी जी और अभिमन्यु जी ने गुरुकुल को पुष्पित-पल्लवित करने में अपना जीवन लगा दिया. धीरे-धीरे गुरुकुल का विस्तार होता चला गया.

इधर भगत जी का आर्य-समाज के प्रचार-प्रसार तथा समाज व लोगों की समस्याओं का निवारण कभी मान-मनुहार से, कभी हठ-योग से, कभी व्रत-उपवास से, तो कभी कानूनी हिसाब-किताब से निरंतर जारी था. कितने ही कठोर व्रत-उपवास इन्होंने स्त्री-सम्मान, निर्बलों, गरीबों, तथा हरिजनों के लिए किये जिन्हे आज तक याद किया जाता है. दोनों-गुरुकुलों की ज़िम्मेवारी के साथ-साथ समाज की कुरीतियों के खिलाफ आपके संघर्ष के कारण अक्सर इन्हें मज़हबी/रिश्वतखोर पुलिस की लाठियों का भी सामना करना पड़ता था. गुरुकुल भैंसवाल व कन्या गुरुकुल से साँझे छपने वाले पत्र-पत्रिका भी बेहतर समाज के निर्माण में अपनी भूमिका बखूबी निबाह रहे थे.

एक तो भगत जी लड़कियों को पढ़ाने का काम कर रहे थे, दुसरे उन इच्छुक हिन्दुओं की पुकार पर उनको शुद्धिकरण करवा कर वापिस हिन्दू धर्म में भी ला रहे थे जिनसे मजबूरन कभी इस्लाम क़ुबूल करवा लिया गया था. अतः कई मुसलमान इस बात से बेहद नाखुश थे और इन्हें मारने की घात में लगे रहते थे. इन्हें पूर्ण आभास भी था. पुत्री के भयभीत होने पर हंस कर आश्वासन दिया कि मेरे चाहने वाले इस इलाके के सभी लोग तुम्हारे भाई, पिता व रक्षक रहेंगे, चिंता न करो. इसके अगले ही दिन जब भगत जी सरोवर के पास वट वृक्ष के नीचे चबूतरे पर बैठे कुछ श्रद्धालुओं को उपदेश देकर आँखे मूँद कर बैठे थे, तभी सैनिकों के वेश में पाँच मुसलमान आये और बन्दूक से गोली मारकर इनकी हत्या कर दी. अंतिम समय में महिला सशक्तिकरण के कट्टर समर्थक अमर हुतात्मा के मुख से "ॐ " की ध्वनि निकली.

भगत जी के पार्थिव शरीर के साथ सुभाषिणी जी व गुणवती जी, माता धूपकौर व अन्य

सुभाषिणी देवी

भगत जी की धरोहर (गुरुकुल) की देख-रेख का ज़िम्मा अब उनकी ज्येष्ठ सुपुत्री सुभाषिणी पर आन पड़ा था जिसके जन्म पर ही उन्होंने अपनी डायरी में लिखा था -"यह समाज की संपत्ति है. इसे परमार्थ सेविका बनाऊंगा ". और जब ये सरकारी स्कूल में बतौर अध्यापिका कार्यरत थी - इन्हें खानपुर गुरुकुल की बेटियों के प्रति संवेदना व ज़िम्मेवारी दर्शाते हुए वहाँ से त्यागपत्र दिलवाकर यहां की बागडोर सौंप दी थी. यह सौभाग्य भी था और भगत जी की दूरदर्शिता भी कि सुभाषिणी के पति के रूप में पंडित अभिमन्यु जी जैसे पढ़े-लिखे, कर्मठ, आदर्श व सेवाव्रती को चुना गया था जिन्होंने गुरुकुल के संचालन व विकास के लिए जीवन पर्यन्त (1991 तक) कार्य किया. भगत जी के मूल्यों व आदर्शों पर चलते हुए सुभाषिणी जी गाँव-गाँव भ्रमण कर गुरुकुल हेतु चन्दा/दान एकत्रित करती. बच्चियों के माता-पिता को उनके घर जा-जा कर आश्वस्त करती कि उन्हें पढ़ने के लिए गुरुकुल में भेजें. कुशाग्र-बुद्धि तो वे थी ही, साथ ही गज़ब की श्रमनिष्ठा, निर्भयता, दानशीलता, धैर्य, सहिष्णुता आदि गुणों की भी स्वामिनी थी, जिसके चलते उन्होंने मार्ग में आने वाले अनेकों कठिनाइयों से जूझते हुए कन्या गुरुकुल का जो विकसित रूप बनाया - वह हम सबके सामने है. दृढ़-संकल्प की धनी सुभाषिणी जी के 'शिक्षा द्वारा महिला उत्थान' को भारत सरकार ने भी पहचाना जिसके फलस्वरूप इन्हें सन 1976 में उच्च सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया.

बाबू जगजीवन राम व इंदिरा गांधी के साथ

सुभाषिणी जी का जन्म 14 अगस्त 1914 को गाँव बुआना-लाखू, पानीपत में माँ लक्ष्मी देवी की कोख से हुआ. इस गाँव में इनके पिता फूल सिंह पटवारी के रूप में कार्यरत थे. यह वह समय था जब बेटियों के आने का स्वागत नहीं हुआ करता था, किन्तु फूल सिंह जी ने लड्डू बंटवाए थे और डायरी में लिखा था - "पुत्री रत्न की प्राप्ति". मात्र ढाई वर्ष की उम्र में माँ का साया सर से उठ गया लेकिन भाग्यशाली थी कि माँ धूपकौर जी जैसी ममतामयी माँ इन्हें दूसरी माता के रूप में नसीब हुई जिन्होंने न केवल इन्हें और अपनी छोटी पुत्री गुणवती (सुभाषिणी से 5 वर्ष छोटी) को बराबर लाड़ से पाला, अपितु अपने पति फूल सिंह जी (जो समाज सुधार हेतु जल्दी ही सन्यासियों सा जीवन जीने लगे थे) का हर कदम पर साथ दिया. उन्होंने ज़ेवर उतार गेरुए रंग के वस्त्र व सादा जीवन अपनाने को कहा तो ख़ुशी-खुशी वह अपनाया, गुरुकुलों के कार्यों के लिए जंगल में डेरा बनाया तो वहाँ यह कह कर इनके साथ रही कि "सीता भी तो राम के साथ वन में रही थी. मैं आपके किसी मार्ग में बाधा नहीं, बल्कि सदा आपकी सहायिका बनूँगी". और इसी प्रकार उन्होंने पहले भैंसवाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की (गुरुकुल के बाहर झोंपड़ी में रहकर) और फिर बाद में कन्या गुरुकुल खानपुर की बेटियों की अन्नपूर्णा बनकर एक माँ के रूप में सेवा की.

समाज की बेहतरी के लिए समर्पित ऐसे माता-पिता की सुपुत्री सुभाषिणी की प्रारम्भिक शिक्षा उनके पैतृक गाँव माहरा, फिर गाँव फरमाणा और फिर गुरुकुल दरियागंज, दिल्ली में हुई. तत्पश्चात उन्हें 1920 में गुरुकुल राजपुरा, देहरादून भेज दिया गया. पिता फूलसिंह जी ने इन्हें पढ़ाने के लिए हर प्रकार के त्याग व समझौते किये, लेकिन अपने निश्चय पर अडिग रहे. यही कारण था कि चेचक की बीमारी फैलने पर भी वे बेटी को घर नहीं लेकर आये कि वापिस घर आ गयी तो कहीं दोबारा पढाई पूरी करने गुरुकुल न जा पाए. और प्रभु की इच्छा हुई तो यह ज़रूर जीवित रहेगी क्योंकि मैंने "इससे बड़ा काम करवाना है". गुरुकुल देहरादून में 10 वर्ष पढाई करने के पश्चात सुभाषिणी ने उन दिनों की "विद्या अधिकारी" परीक्षा पास की और फिर दिल्ली की आर्य पाठशाला (चावड़ी बाजार) में आठवीं की परीक्षा हेतु दाखिला लिया. हालाँकि दिल्ली जैसे बड़े शहर की लड़कियों के हाव-भाव देख पीली साड़ी व खड़ाऊं वाली सुभाषिणी के मन में ज़रा हीन भावना आ गयी और परीक्षा इन्होंने प्राइवेट ही दी, लेकिन तीव्र बुद्धि होने के कारण नियमित छात्राओं से कहीं अधिक अंक लेकर परीक्षा पास की.

माता धूपकौर की अंतिम यात्रा में सुभाषिणी जी, गुणवती जी, माडूसिंह जी, विष्णुमित्र जी व अन्य

पंडित अभिमन्यु जी व सुभाषिणी जी

23 जून 1931 में पंडित अभिमन्यु (गुरुकुल मटिण्डू व झज्जर के स्नातक) जी से विवाह संपन्न होने के बाद सुभाषिणी जी ने 1933 में रोहतक से जे. बी. टी. का प्रशिक्षण पूरा किया और जींद के सरकारी स्कूल में अध्यापिका के रूप में कार्यरत हो गयी. किन्तु भगत जी ने 1936 में कन्या गुरुकुल की स्थापना की और पुत्री को नौकरी से त्यागपत्र देकर खानपुर की बेटियों को पढ़ाने और गुरुकुल की देख-रेख के लिए सात दिन का उपवास कर के मना लिया. यद्यपि सुभषिणी ये सब नहीं चाहती थी, लेकिन पिता की लड़कियों को अपने गुरुकुल के माध्यम से पढ़ा-लिखा कर सक्षम व सभ्य बना कर समाज को समर्पित करने की प्रबल इच्छा को इन्होने समझा और उनकी आज्ञा को सर-माथे रख महिला उत्थान से समाज निर्माण के इस यज्ञ में अपनी आहुति डाल दी.

एक बार उन्होंने यह कदम उठाया, तो कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा. 14 अगस्त 1942 में भगत जी के बलिदान के बाद कितनी ही आर्थिक-सामाजिक कठिनाइयां आयी, गुरुकुल बंद करने की सलाहें आयीं, लेकिन इस दृढ़-संकल्प योगिनी ने गुरुकुल के मामले में कोई समझौता नहीं किया, बल्कि इनके निश्चय अधिक से अधिक दृढ़ होते चले गये. वैसे तो समस्त गुरुकुल की बेटियों को ही ये अपना मानते थे, सुभाषिणी जी व अभिमन्यु जी की दो पुत्रियाँ हुई - कमला रानी व विजय रानी.

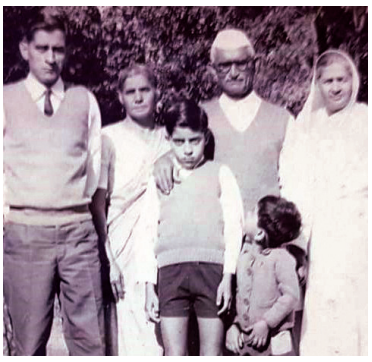

बहन गुणवती, बेटी कमला, और बेटी विजय के परिवार के साथ सुभाषिणी जी

जहाँ कई बार अपेक्षित लोगों से मदद माँगने पर

निराशा हाथ लगी, वहाँ ऐसे गुरुकुल हितैषी व महिला उत्थान के समर्थक भी मिले जिन्होंने हर कदम पर बहनजी का साथ दिया. इनमें सबसे प्रमुख नाम पंजाब के पूर्व विधान सभा सदस्य, हरियाणा के पूर्व मंत्री, ईमानदार सुयोग्य वकील व गंभीर चिंतक चौधरी माडूसिंह जी का आता है. अनेक अन्य योगदानों के अलावा उनका आयुर्वेदिक कॉलेज के विकास में विशेष योगदान रहा, इसीलिये सन 1984 में उनके देहावसान के बाद आयुर्वेदिक कॉलेज का नाम उन्हीं के नाम पर "माडूसिंह मेमोरियल गर्ल्ज़ आयुर्वेदिक कॉलेज" रखा गया.

खानपुर की बेटियों के लिये बहनजी की मदद करने में अनेक अन्य महत्वपूर्ण योगदान करने वालों में - चौधरी शेर सिंह, चौधरी जयराम, चौधरी देशराज, चौधरी सूरजमल, श्री धर्मपाल वैद्य, श्री रामसिंह नम्बरदार, श्री नेकी राम, श्री माईधन, श्री घासीराम, श्री विष्णुमित्र, चौधरी गणेशराम, श्री महेश्वर जी, श्री धर्मचंद शास्त्री, श्री हृदयराम मालिक, श्री होशियार सिंह, श्री जयलाल वानप्रस्थी, श्री पोहकर सिंह, श्री रामस्वरूप, डॉ. धर्मचंद नरवाल, डॉ. ओमप्रकाश छिकारा, डॉ. लखीराम, डॉ. तारावती, वैद्य बनवारी लाल, कपिलदेव शास्त्री (पूर्व सांसद) तथा चौधरी रणबीर सिंह (पूर्व मंत्री) का नाम प्रमुख है. प्रारम्भिक प्राध्यापकों में लाला लहरी सिंह, लाला हरीशचंद्र, श्री लक्ष्मी चंद्र अग्रवाल, श्री जे.एल.वांगु आदि प्रमुख रहे. इसके अतिरिक्त यहाँ की उन पूर्व छात्राओं, अध्यापिकाओं व प्राध्यापिकाओं का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने ब्रह्मचारिणी रह कर लम्बे समय तक अपना सहयोग व अपनी सेवाएं दीं. इनके नाम हैं - डॉ. कुमारी शकुंतला (1956-1998), डॉ. कुमारी ज्ञानवती (1959-2003), सुश्री साहबकौर, शांति बंसल, यशवंती, विजयलक्ष्मी आदि. गृहस्थ महिलाओं में श्रीमती सुमित्रा जी, श्रीमती राजबाला जी व श्रीमती प्रियंवदा जी का नाम प्रमुख है.

बाएं से - शकुंतला जी की सेवानिवृत्ति पर (1998), डिग्री कॉलेज के NAAC दौरे के समय (फ़रवरी 2003)
प्राचार्या ज्ञानवती जी के साथ, पुत्रियाँ कमला रानी व विजय रानी (2023)

उपरोक्त भाइयों-बहनों की मदद के लिये गुरुकुल की भूमि सदैव आभारी रहेगी, किन्तु 1942 में भगत जी के देहावसान के बाद से आज तक जिस एक गौरवमयी महाशक्ति के कारण यह संस्था उत्तर भारत के पहले महिला विश्वविद्यालय के रूप में आज भी अपने पंख लिये उड़ान भर रही है - उस त्याग व तप की प्रतिमूर्ति सुभाषिणी के गुरुकुल को संचालित रखने के प्रण, यथोचित निर्देशन, रात-दिन देखरेख व अप्रतिम कार्यक्षमता के बिना यह असंभव था.

भगत जी के जीवन काल तक तो कन्या गुरुकुल (1936 -1942) परम्परागत ही रहा, उनके बलिदान के पश्चात यहाँ की प्रबंधक समिति ने प्रधान चौधरी माडूसिंह जी (जो बाद में हरियाणा सरकार में शिक्षा मंत्री भी बने) के नेतृत्व में समय की मांग के अनुरूप शैक्षिक कार्यों का विस्तार किया. धीरे-धीरे हाई स्कूल और जे.बी.टी. (बेसिक प्रशिक्षण केंद्र) को मान्यता मिली जिनका शिलान्यास तत्कालीन मुख्यमंत्री (पंजाब) श्री प्रताप सिंह कैरों के कर-कमलों से 1961 में हुआ. इसी तरह पहले छात्रावास की नीव 1965 में रख दी गयी जिसका उदघाटन श्री राजा हरेंद्र सिंह (माल मंत्री, पंजाब सरकार) द्वारा हुआ. भगत जी के बोये गुरुकुल के नन्हे पौधे को

बहन सुभाषिणी हवा-पानी-धूप-खाद उपलब्ध करवाती रही और पौधे की नित नयी शाखाएं निकलती रही. आज वही पौधा महिला विश्वविद्यालय के वट-वृक्ष रूप में सात हज़ार से अधिक बालिकाओं अपनी छाया से लाभान्वित कर रहा है.

संस्था के हित में कार्य करते कितने ही कठिन पड़ाव आये, इनकी संकल्प शक्ति के सामने सब धूमिल हो गये. जैसे कच्चे कमरे थे, तो केवल पक्के करने का निश्चय ही नहीं, ईंटों का भट्ठा तक लगाने का निर्णय लिया कि ईंटें मोल न लेनी पड़ें; विरोधों के बावजूद बड़े ऋण लिये; जिले के अधिकारियों से मिलने गुरुकुल के कार्य करवाने हेतु कठिन रास्तों पर पैदल चल कर पहुँची, लेकिन पिता के उद्देश्य व आज्ञा पूरी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी. इतना ही नहीं, दान आदि मांगने हेतु जब विभिन्न गाँवों में जाती और कहीं किसी अबला, निराश्रिता, विधवा, शराबी द्वारा प्रताड़ित पत्नी अथवा अन्य किसी प्रकार से उपेक्षित बाला को देखती, उसे लाकर गुरुकुल में आश्रय देकर पढ़ाती और आत्मनिर्भर बनाती. इसी कड़ी में प्रौढ़-शिक्षा के माध्यम से भी बुज़ुर्ग अनपढ़ महिलाओं का भला किया. आस-पास के तथा गुरुकुल के सभी लोग इन्हें प्रेम व श्रद्धा से बहनजी कह कर पुकारते थे और ये ममतामयी बहन भी जब कभी किसी भटके नौजवान या शराबी भाई को समझाकर सही रास्ते पर ला सकती तो ज़रूर लाती थीं. इस प्रकार अनेकों घरों में इन्होंने कलह आदि को दूर भगा कर खुशियों का उजाला किया.

यह कर्मयोगिनी, कुशल प्रशासिका बहनजी के गुरुकुल व समाज के हित के लिये किये गए अथक प्रयासों का ही परिणाम था कि "कन्या गुरुकुल" जो 'कन्या पाठशाला' के रूप 1936 में मात्र 3 छात्राओं से प्रारम्भ हुआ था, वह सन 2003 तक आते-आते उत्तर भारत की एक सम्माननीय संस्था के रूप में मान्य हो चुका था जहाँ स्कूल के साथ साथ भक्त फूल सिंह मेमोरियल गर्ल्ज़ कॉलेज, भक्त फूल सिंह कॉलेज ऑफ़ एज्युकेशन, माड़ूसिंह मेमोरियल आयुर्वेदिक संस्थान, भक्त फूल सिंह महिला पॉलिटेक्निक तथा पद्मश्री सुभाषिणी गर्ल्ज़ लॉ कॉलेज में दूरस्थ क्षेत्रों से आयी हज़ारों छात्राएँ विभिन्न विषयों में शिक्षा ग्रहण कर रही थी. दूर की छात्राओं के लिये हॉस्टलों की सुविधा थी और आस-पास के क्षेत्रों से आने वाली छात्राओं के लिये गुरुकुल की बसें सक्रिय थीं. हाँ, समय के चलते कर्मचारियों निःस्वार्थ सेवाएँ अब कम होने लगी थी. पहले जितने समर्पित लोग अधिक नहीं रहे थे, लेकिन कुछ थे जिनके दम पर बहन जी ने अपने महाप्रयाण से पहले कहा था – "मुझे चिंता नहीं है क्योंकि मेरे सिपाही दिलोजान से अपने-अपने मोर्चों पर डटे हुए हैं. बस खाली मत बैठना, भटकना नहीं. लक्ष्य सामने रखो और जुटे रहो".

अंतिम यात्रा

अपनी अंतिम साँस तक सुभाषिणी जी गुरुकुल की हितैषी रह कर सक्रिय रही, यह इस बात से ही साबित हो जाता है कि जाने से कुछ ही दिन पहले अस्वस्थ होने के बावजूद कुछ जद्दोजहद कर के इन्होंने विधि महाविद्यालय (लॉ कॉलेज) के लिये खानपुर गाँव की पंचायत से 28 किले ज़मीन पर मुहर लगवा ली थीं. जब 10 मार्च 2003 को इनका देहावसान हुआ तो लॉ कॉलेज का नाम इन्हीं के नाम पर रखा गया - "पद्मश्री सुभाषिणी देवी गर्ल्ज़ लॉ कॉलेज". अपोलो अस्पताल, नई दिल्ली में मरणासन्न हालत में अपनी बेटी कमला जी को कहा - "संस्था अब ठीक है. जो मुझे आदेश मिला था, मैंने किया. जब तक तुझमें शक्ति रहे, इसे मत छोड़ना. खुश रहना. जा रही हूँ. देख, दरवाज़े खुल रहे हैं. सबको हाथ जोड़ देना."

बहन जी की दो पुत्रियों (कमला रानी व विजय रानी) में से ज्येष्ठ कमला रानी जी यहाँ रह कर अपनी यथायोग्य सेवाएं देने हेतु राज़ी हो गयी. संस्था काफ़ी बड़ी हो चुकी थी और सुभाषिणी जी के जाते-जाते समय ऐसा आ गया था कि स्वार्थ व लोलुपता के चलते रक्षकों व भक्षकों में भेद न हो पाता था. इसी कारण संस्था के शुभचिंतकों तथा हितैषियों द्वारा इसे सरकार को सौंपने का निर्णय लिया गया. सुभाषिणी जी की बड़ी पुत्री कमला जी (जो अब उनकी ही प्रतिनिधि थी) ने सहर्ष इस निर्णय को अपनी

बाएं से - कमला जी का स्वागत करते हुए क. गु. व. मा. विद्यालय की पूर्व प्रिंसिपल साहेबकौर जी, भगत जी को श्रद्दांजलि देते हुए कमला जी, वर्तमान कुलपति प्रो. सुदेश, कमला जी, शकुंतला जी, डॉ. भीम सिंह जी वि.वि. के न्यूज़लेटर 'स्पार्क' का विमोचन करते हुए (2023)

सहमति दी और परिणाम था कि 18 अगस्त सन 2006 को तत्कालीन हरियाणा सरकार द्वारा खानपुर कन्या गुरुकुल को भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय घोषित कर दिया गया. फैसला ऐतिहासिक था क्योंकि ग्रामीण अंचल में स्थापित होने वाला यह विश्वविद्यालय उत्तर भारत का पहला महिला विश्वविद्यालय था.

आज विश्वविद्यालय के गौरव का प्रतीक हैं - विभिन्न विषयों के 17 विभागों, 3 घटक संस्थानों, 1 पॉलिटेक्निक, 2 (हिंदी माध्यम व अंग्रेजी माध्यम) विद्यालयों, 2 क्षेत्रीय केंद्रों, 6 सम्बद्ध महाविद्यालयों, 6 विशिष्ट केंद्रों में शिक्षा ग्रहण करने वाली छात्राएँ. दूरदर्शी सोच के धनी भगत जी के विपरीत परिस्थितियों में उठाये नारी उत्थान के कदम के बिना तो यह सब असंभव था ही, असीमित साहस, बुद्धिमता व अथक प्रयासों से उस मार्ग पर चलते हुए एक नन्हीं संस्था को इन ऊँचाइयों तक पहुंचाने का श्रेय आदरणीया सुभाषिणी जी को ही जाता है जिनकी सेवाओं को पहचानते हुए भारत सरकार ने 1976 में उच्च सम्मान पद्मश्री से सम्मानित कर दिया था.

सामाजिक परिप्रेक्ष्य

भारत के नारी-सशक्तिकरण के पहले दौर (1850-1915) में जहाँ भारत के अनेक महापुरुषों (राजा राम मोहन रॉय, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फूले, भीम राव अम्बेडकर आदि) ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठाई, वहीँ दूसरे दौर (1915-1947) में बहुत सी महिलायें स्वयं आगे आयी और महात्मा गांधी की प्रेरणा से स्वत्रंत्रता संग्राम में भी भाग लिया जिनमें सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गाँधी, सावित्री बाई फूले, सुचेता कृपलानी, अरुणा आसफ़ अली, दुर्गा बाई देशमुख आदि शामिल थी. भगत फूलसिंह जी गांधी जी से बहुत प्रेरित थे और उनसे पत्राचार भी होता था. उन्होंने इसी काल-खण्ड में कन्या गुरुकुल स्थापित किया. लेकिन शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र में यह निर्णय बहुत जोखिम भरा था. एक तो पितृसत्तात्मक वातावरण था ही, दूसरे परम्परागत धार्मिक ढांचा इस बात की इजाज़त न देता था. उस पर नेक इरादों व संकल्पशक्ति की कमी और राजनीतिक निष्क्रियता का हावी होना. इन सब कारणों से भगत जी के इस दूरदर्शी व क्रांतिकारी कदम के मार्ग में अनेक काँटे बिछे थे. किन्तु आर्य-समाज के मूल सामाजिक सुधार के प्रण से भगत जी में जो अन्तः: जागृति आयी थी, उसके फलस्वरूप उन्होंने निराशा को अपने पास फटकने न दिया और दृढ़ निश्चय व ईश्वरीय आस्था रखते हुए कन्या गुरुकुल की नींव रखी. इस महानिर्णय के कारण यद्यपि उन्हें अपने प्राण गँवाने पड़े लेकिन जिस विचार का बीज बोया जा चुका था, उसके अंकुर को फूटने से भला कौन रोक सकता था और जिस पौधे के संरक्षण को सुभाषिणी जी जैसा समर्पित बाग़बान मिल गया, उसकी जड़ों को उखाड़ने की क्षमता तो बड़ी-बड़ी आँधियों में भी न थी.

प्रमुख धारणा / मूल विचार

दूरदर्शी व महिला सशक्तिकरण के कट्टर व प्रबल समर्थक भगत फूल सिंह जी का वैचारिक मत और दृढ़ विश्वास था कि यदि बेटियों में वैदिक संस्कृति के अनुसार भारतीय मूल्यों की शिक्षा का संचार किया जाए, तो जो उस प्रवाह से सब कुरीतियाँ व अधर्म समाप्त होगा जिसके फलस्वरूप एक समतावादी और प्रगतिशील समाज का निर्माण होगा. और सफाई, सच्चाई व तरतीब के साथ अपने लिए नहीं अपितु समाज की बेहतरी के लिए जीने से ही जीवन सफल होगा.

सुभाषिणी जी के जीवन का मन्त्र था - "कार्य व साधेयम शरीरं व पातेयम" अर्थात प्राण भले ही चले जाएँ किन्तु अपनी संस्कृति व कर्तव्य से कभी भी विमुख नहीं होना चाहिए. और उनका परम विश्वास था कि सहिष्णुता तथा धैर्य के साथ रखे गए दृढ़ संकल्प बड़े से बड़े पहाड़ों को मार्ग से हटाने की क्षमता रखते हैं.

गुरुकुल परम्परा

संसार के प्राचीनतम ग्रंथों में भारतीय वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्व वेद, सामवेद) का नाम आता है और चारों वेदों में सबसे प्राचीन ऋग्वेद है जहाँ से वैदिक काल का प्रारम्भ माना जाता है. भारत में एक समृद्ध शिक्षा प्रणाली का विकास वैदिक काल में ही हुआ. इसी को हम प्राचीन शिक्षा प्रणाली अथवा गुरुकुल परम्परा भी कह सकते हैं. 'गुरुकुल' शब्द का अर्थ है 'गुरु का परिवार'. यहाँ गुरु के परिवार का मतलब किसी पारम्परिक कुल से न होकर एक गुरु और उसके पास रह कर शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थी होते हैं. भारतीय संस्कृति के विकास में गुरुकुलों का विशेष महत्त्व था.

गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा 'उपनयन संस्कार' के पश्चात प्रारम्भ होती थी जिसमें विभिन्न विषयों में दिए जाने वाले ज्ञान एवं कला-कौशल का प्रशिक्षण होता था. शिक्षा पूर्ण होने पर समावर्तन समारोह में गुरुओं द्वारा शिष्यों को जीवन पर्यन्त स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन तथा जीवन व राष्ट्र के प्रति कर्तव्य पालन का सन्देश होता था. गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षा प्रदान करना पूर्ण रूप से गुरुओं का दायित्व होता था, न कि राज्य (सरकार) का. शिक्षा पूरी तरह से निशुल्क होती थी. शिष्यों के आवास तथा भोजन आदि की व्यवस्था भी गुरु ही करते. उनकी आय का स्रोत धनी लोगों द्वारा दान (भूमि, पशु, अन्न, वस्त्र आदि) और शिष्यों द्वारा समाज से मांग कर लायी भिक्षा होती थी. आत्मज्ञान व ब्रह्मज्ञान (मोक्ष प्राप्ति-अंतिम लक्ष्य) को केंद्र में रख वैदिक काल में शिक्षा के उद्देश्यों में मुख्यतः ज्ञान का विकास, समाज/राष्ट्र के प्रति कर्तव्य पालन तथा संस्कृति का संरक्षण व विकास थे. साथ ही साथ विद्यार्थी के शारीरिक-मानसिक, नैतिक-चारित्रिक विकास, उचित आहार-विहार, उचित आचरण, उचित दिनचर्या का पालन तथा प्रत्येक कि योग्यता अनुसार कला-कौशल तथा आवश्यकता अनुसार जीविकोपार्जन आदि का विशेष ध्यान रखा जाता था. दोनों प्रकार से शिक्षा दी जाती थी- भौतिक (अपरा- भाषा, व्याकरण, अंकशास्त्र आदि सभी विषय) व आध्यात्मिक (परा- वैदिक साहित्य, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, इन्द्रिय निग्रह, धर्मानुकूल आचरण भक्ति व यज्ञ आदि का प्रशिक्षण). जहाँ तह स्त्री शिक्षा की बात है- प्रारम्भिक वैदिक काल में जहाँ स्त्रियों को शिक्षा का पूर्ण अधिकार रहा, वहीँ वैदिक काल का आखिरी चरण आते-आते ऐसा नहीं रहा और स्त्रियों को विभिन्न कारणों के चलते शिक्षा से वंचित रखा जाने लगा. जिन महान स्त्री विदुषियों के नाम हम सुनते हैं (विश्वरा, अपाला, होमशा, शाश्वती, घोषा आदि) वे सब प्रारम्भिक वैदिक काल से ही सम्बन्ध रखती थी.

भगत फूल सिंह जी ने गुरुकुलीय परम्परा को जीवित रखते हुए लड़कों की लिए 'गुरुकुल भैंसवाल' की स्थापना 1919 में की थी, लेकिन ऐतिहासिक कदम तो 1936 में उन्होंने कन्या गुरुकुल, खानपुर की स्थापना कर के उठाया था जो उत्तरी भारत के ग्रामीण अंचल में होने वाला एक अनूठा साहसिक प्रयोग था. प्रारम्भिक दौर में यह सही मायनों में प्राचीन भारत के वैदिक काल

की ही गुरुकुल परम्परा का निर्वहन था. उन्होंने और उनके बाद सुभाषिणी जी व गुरुकुल के/की अन्य समर्पित आचार्य/आचार्याओं ने यहाँ पर आयी छात्राओं को सनातन धर्म, आर्य समाज व अन्य बौद्धिक ज्ञान के क्षेत्रों में प्रशिक्षित कर एक बेहतर समाज की मार्गदर्शिकाएँ बना कर भेजा और इतिहास गवाह है कि उन्होंने अपना गृहस्थ से लेकर आदर्श शिक्षिका की भूमिका बखूबी निभाई. कालांतर में समय और ज़रूरतों के हिसाब से परिवर्तन आया और गुरुकुल अन्य शिक्षण संस्थानों की तरह ही सरकारी अनुदान की मदद से विकसित होने लगा, हालांकि कुछ अच्छी बातों का आज भी यहाँ अनुसरण होता है - जैसे कि नियमित रूप से यज्ञशाला में हवन करवाया जाना. भारत के कुछ अन्य प्रसिद्द विश्वविद्यालय (जैसे तक्षशिला व नालंदा आदि) भी पूर्व में गुरुकुल ही हुआ करते थे.

वैदिक काल की नारी: प्रेरणा स्त्रोत

यद्यपि माना जाता है कि यूरोप में नारी-मुक्ति की अवधारणा को बल बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मिला, इसके विपरीत वैदिक काल में भारत की महिलाओं का बौद्धिक रूप से बंधनमुक्त होने का इतिहास पुराना है. पौराणिक ग्रंथों से हमें मालूम होता है कि प्राचीन भारत की महिलायें न केवल अपने निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र थी, बल्कि पुरुषों के बराबर ही सम्मानित व सुरक्षित थी. उनके बिना कोई धार्मिक अनुष्ठान पूर्ण नहीं माना जाता था. राजनीतिक हस्तक्षेप तो उनका था ही, उन्हें युद्ध कौशल भी सिखाया जाता था (विषपाला का नाम इस श्रेणी में आता है). नारियों को महत्वपूर्ण 'उपनयन संस्कार' के पश्चात पुरुषों की ही भांति वेदों का अध्ययन करने का न केवल अधिकार था, बल्कि उन्हें अध्ययन के लिए प्रेरित भी किया जाता था. पवित्र ग्रंथों के साथ-साथ उन्हें ज्ञान के अन्य आयामों तक पहुँचने पर भी कोई पाबंदी नहीं थी. सद्योवधु (जो महिलायें केवल विवाहित होकर घर संभालती थी) को छोड़ कर शेष दोनों प्रकार की महिलायें - ब्रह्मवादिनी व ऋषिकाएँ पढ़ी-लिखी ज्ञानी ही होती थी. ब्रह्मवादिनी वे महिलायें होती थी जिन्हे यज्ञोपवीत संस्कार के बाद वेद पढ़ने और ब्रह्म के बारे में शास्त्रार्थ करने का पूर्ण अधिकार था. इनमें गार्गी, मैत्रेयी व सुलभा आदि के नाम आते हैं. और जो वैदिक अध्ययन सम्पूर्ण कर लेती थी, ऋषिका कहलाती थी. ग्रंथों में ऐसी करीब ३० वैदिक ऋषिकाओं के नाम आते हैं. प्रमुख ऋषिकाओं में घोषा, लोपामुद्रा, विश्ववरा, रोमाशा आदि के नाम आते हैं. संस्कृति, सभ्यता, कला, धर्म आदि क्षेत्रों में महिलाओं की प्रभावशाली भूमिका के अलावा भारत की चोल-साम्राज्य की औरतें, रानी पद्मिनी व झांसी की रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाएँ भी भारत में हुई जिनका राज-पाट के क्षेत्र में भी पूर्ण योगदान रहा जो जगत में उस कालखंड में अन्यत्र नहीं सुना गया. अतः भगत फूल सिंह जी के 'शिक्षा द्वारा नारी-उत्थान' को नारी-नेतृत्व की उसी प्राचीन परम्परा का पुनर्जागरण कहना कोई अतिश्योक्ति न होगी.

वेद व आर्य समाज

भगत जी भारतीय संस्कृति तथा सनातन धर्म के मूल्यों से बहुत प्रभावित थे. वेदों में निहित आचार- सिद्धांतों व व्यवस्था विधान आदि की तो उन पर छाप थी ही, आर्य समाज के नियमों का भी उन पर गहरा असर हुआ, जिसके फलस्वरूप उन्होंने सभी सांसारिक सुख-साधनों का त्याग किया और स्वयं को लोक-कल्याण हेतु लिए किये जा सकने वाले अनेक सामाजिक अभियानों का हिस्सा बनाया. ऐसा ही तत्कालीन समाज की नज़र से क्रांतिकारी आंके जाने वाला उनका स्वयं चलाया गया अभियान था - ग्रामीण बेटियों को शिक्षित करना. आर्य-समाज के समाज-सुधार की आधारभूत नीतियों से वे इतने अभिभूत थे कि उन्होंने शिक्षा के द्वारा स्त्रियों को सामाजिक बंधनों से मुक्त करवाने का बीड़ा उठाया. आर्य समाज के पुरुषों व स्त्रियों के

समानतावादी समाज के दृष्टिकोण को हृदय में लिए भगत जी ने कन्या गुरुकुल स्थापित करने का अडिग निर्णय लिया ताकि छात्राएँ भविष्य में नेतृत्व के लिए तैयार हो सकें.

जन-आंदोलन/जन-भागीदारी

इस प्रकार पहले जो गुरुकुल केवल समाज के उदार व धनी व्यक्तियों से दान व सहयोग की अपेक्षा पर स्थापित हुआ था, वह छात्राओं की उच्चशिक्षा का एक बहुप्रिय लक्ष्य एवं गंतव्य बन चुका है. भगत जी की दूरदर्शिता एवं सुभाषिणी जी के अथक प्रयासों की बदौलत जन-भागीदारी से प्रारम्भ हुआ यह गुरुकुल आज भारतीय सदाचार व मूल्यों का एक प्रमुख संस्थान है. हरियाणा सरकार द्वारा अगस्त 2006 में मान्यता प्राप्त भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय, भगत जी के स्त्रियों हेतु "शिक्षा से सशक्तिकरण' के मूल विचार का ही उन्नयन कर रहा है. महिला विश्वविद्यालय में गुणात्मक तथा वहन किये जाने योग्य दी जाने वाली शिक्षा रोज़गारोन्मुखी होने के साथ-साथ छात्राओं को ज्ञानवान, कुशल तथा सुरुचि संपन्न भी बना रही है.

मूल्य आधारित शिक्षा संग नए सोपानों की ओर …

गुरुकुलीय आधार होने के कारण यहाँ दी जाने वाली शिक्षा आधुनिकता के साथ साथ भारतीय परम्परा व लोकाचार भी अपने में समाए है. शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत जहाँ छात्राओं को नयी सुविधाओं से सुसज्जित खेल-परिसर में प्रशिक्षित किया जाता है, वहीँ उनके मानसिक बल को बनाये रखने हेतु योग के कार्यक्रम भी निरंतर करवाए जाते हैं। विश्वविद्यालय की प्रेरणा स्त्रोत प्रारम्भ से ही शैक्षिक सिद्धांतों पर आधारित भारतीय मूल्य प्रणाली है जो वैदिक साहित्य व उपदेशों से सृजित हुई है. पुराने बरगद के समीप स्थित चिरकाल से स्थित यज्ञशाला में वर्तमान समय में प्रतिदिन हवन की परंपरा है. अपने पूर्वजों/पूर्व महानायकों की जगाई आध्यात्मिकता व प्रेम की ज्योत प्रज्ज्वलित रखने के लिए विश्वविद्यालय प्रतिबद्ध है और इस प्रकार "बेटी बचाओ-बेटी बढ़ाओ" के स्लोगन को प्रारम्भ से ही सार्थक करता आया है.

प्रत्येक क्षेत्र में नारी सशक्तिकरण का मुख्य आधार 'शिक्षा' होने के कारण भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय गुणवत्तापरक शोध व समावेशी सामाजिक उन्नति के साथ निरंतर भारत का प्रमुख शिक्षण संस्थान बनने की ओर अग्रसर है. आज इस जगह जहाँ भगत जी द्वारा स्थापित हिंदी माध्यम की कन्या गुरुकुल पाठशाला (अब हरियाणा सरकार द्वारा मान्यताप्राप्त वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय) सुचारु रूप से चल रही है, वहाँ अनेक विषयों में अंग्रेजी माध्यम के पी.एच.डी. तक के आधुनिक कोर्स भी चल रहे हैं; भारतीय भाषाओं संस्कृत व हिंदी के साथ-साथ विदेशी भाषाएँ (फ्रेंच, जर्मन, रूसी) भी पढ़ाई जा रही हैं; तथा अन्य भारतीय संस्थानों के साथ साथ विदेशी विश्वविद्यालयों से भी समझौता ज्ञापन के तहत छात्राओं को हर संभव दिशा में उन्नत होने के अवसर दिए जा रहे हैं. सम्पूर्ण जगत में शिक्षा के मुख्य रूप से माने जाने वाले उद्देश्य हैं - सत्य की खोज (आध्यात्मिकता), जीवन स्तर का बेहतर होना, तथा व्यक्ति का शारीरिक व मानसिक विकास होना. गौर करने लायक बात यह है कि गुरुकुलीय शिक्षा इन्हीं उद्देश्यों को लेकर चली पद्धत्ति है, किन्तु सर्वमान्य है कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था इन उद्देश्यों को पूरा करने में असमर्थ रही है. ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में आशा की किरण तो निस्संदेह नज़र आती है, क्योंकि यदि समग्रता के साथ इस पर चला जाए तो उपरोक्त तीनों उद्देश्यों की पूर्ति सम्भव है. हम विश्वविद्यालय के कर्मयोगी कर्मचारीगण अपने सशक्त एवं सुयोग्य नेतृत्व की छाया में परम्परा व आधुनिकता के समन्वय के साथ हरियाणा सरकार/भारत सरकार की नीतियों पर अमल करते हुए अमर हुतात्मा भगत फूल सिंह जी की इस तपोभूमि को विकास के नए सोपानों पर ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं.

सन्दर्भ सूची:

1. आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड, *अमर हुतात्मा श्री भक्त फूलसिंह जी का जीवन-चरित्र*, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्द मठ, रोहतक, 1951.
2. डॉ. शकुंतला एवं डॉ. ज्ञानवती, *पद्मश्री सुभाषिणी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व*, यश पब्लिकेशंस, दिल्ली, 2006.
3. सुश्री शकुंतला (सम्पादिका), सुश्री ज्ञानवती एवं सुश्री साहेबकौर (सह-सम्पादिका), *अभिनन्दन ग्रन्थ: आचार्या पद्मश्री सुभाषिणी देवी*, वीरेश स्मार्ट आर्ट प्रिंटिंग ओफ़्सेट प्रेस, दिल्ली, 1992.
4. साक्षात्कार, डॉ. (कुमारी) शकुंतला, पूर्व प्राचार्या, भगत फूलसिंह मेमोरियल गर्ल्ज़ कॉलेज, खानपुर कलां, 25 जनवरी 2024.
5. साक्षात्कार, डॉ. (कुमारी) ज्ञानवती, पूर्व प्राचार्या, भगत फूलसिंह मेमोरियल गर्ल्ज़ कॉलेज, खानपुर कलां, 23 फरवरी 2024.
6. साक्षात्कार, श्रीमती कमला रानी, सुपुत्री आचार्या सुभाषिणी एवं सदस्य कार्यकारिणी, भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां, 25 फरवरी 2024.
7. साक्षात्कार, श्रीमती विजय रानी, सुपुत्री आचार्या सुभाषिणी, सोनीपत, 27 फरवरी 2024.

सुभाषिणी देवी शोधपीठ

शिक्षा द्वारा नारी उत्थान को समर्पित कर्मयोगिनी पद्मश्री सुभाषिणी देवी - जिनके त्याग, तप, अविस्मरणीय निर्विराम संघर्ष व अप्रतिम कार्य-क्षमता के कारण उनके पिता भगत फूल सिंह का स्वप्न आश्चर्यजनक रूप से बड़े पैमाने पर व इतने सुन्दर तरीके से साकार हो पाया, उनके नाम पर वर्तमान कुलपति महोदया प्रोफेसर सुदेश जी ने महिला विश्वविद्यालय में 8 दिसंबर 2023 को "सुभाषिणी देवी शोधपीठ" की स्थापना की. जिसमे पहली मानद (Honorary) प्रोफेसर डॉ. (कुमारी) शकुंतला जी को बनाया गया जिन्होंने सर्वाधिक लम्बे समय तक कन्या गुरुकुल को अपनी सेवाएं दी और यहीं के भगत फूल सिंह मेमोरियल गर्ल्ज़ कॉलेज की प्रिंसिपल के रूप में सेवानिवृत्त हुई. सुभाषिणी देवी शोध पीठ के मुख्य उद्देश्य होंगे - कन्या गुरुकुल के संस्थापक भगत फूल सिंह जी और सुभाषिणी जी के जीवन व दर्शन पर आलोचनात्मक अध्ययन, इन पर आर्य-समाज व अन्य समाज सुधारकों का प्रभाव, गुरुकुलीय परंपरा का आज के आधुनिक शैक्षणिक सन्दर्भ में महत्त्व, तत्कालीन जन-भागीदारी व इसका समाज-विश्वविद्यालय अंतरापृष्ठ (Society University Interface) में प्रासंगिकता, भगत जी और सुभाषिणी जी पर विनिबंध (Monographs) प्रकाशित करना, साक्षात्कारों व रिकॉर्डिंग्स का संग्रह, संस्थापकों के दर्शन पर आधारित संगोष्ठी व व्याख्यान आदि करवाना तथा कुछ अन्य सम्बंधित शैक्षणिक कार्य.